ISSN: 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 7, अंक-1, अप्रैल 2019

# पंजाब की लोकप्रिय युगल गान परंपरा व अखाड़ा गायकी

**डॉ. अलंकार सिंह**
*असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला*

**अमनप्रीत कौर**
*शोधार्थी, संगीत विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला*

*Paper recieved on : April 30, 2019, Return : May 04, 2019, Accepted : May 17, 2019*

## सार-संक्षेप

*सांसारिक सभ्यता का आधार स्थल कहे जाने वाले पंजाब का संगीत यहाँ की संस्कृति का अटूट अंग है। यहाँ की पारम्परिक गायकी की हर विधा अखाड़ों के रूप में पली-बढ़ी है। खास तौर पर युगल गान इन अखाड़ों की शान रहा है। इस शोध पत्र में पंजाबी युगल गान परंपरा व प्रमुख जोड़ियों का विश्लेषण किया गया है। युगल गान के माध्यम से पंजाबी गायकी के क्षेत्र में रोमांटिक गीतों की शुरुआत हुई। औरत और मर्द की युगल जोड़ी के रूप में प्रश्नोत्तर प्रणाली पर आधारित यह गायकी रीति-रिवाज, घरेलू समस्याएँ और पारिवारिक रिश्तों की भावनाओं को बाखूबी व्यक्त करती हैं। लोक धुनों पर आधारित यह गायकी तूंबी, ढोलक, अलगोज़े इत्यादि साज़ों के साथ गाई जाती है। पंजाबी युगल गान को अखाड़ों तक पहुँचाने वाली प्रथम जोड़ी चांदी राम व शांति देवी की स्वीकार की गई है। इनके बाद कई अनेक जोड़ियाँ जैसे मोहम्मद सदीक-रणजीत कौर, अमर सिंह चमकीला-अमरजोत इत्यादि भी प्रसिद्ध रही। 1960 से लेकर तकरीबन 1984 तक का समय युगल गान का स्वर्ण काल व ग्रामोफोन गायकी का युग भी कहा जा सकता है।*

**मुख्य शब्द :** 1. पंजाबी गायकी, 2. अखाड़ा, 3. युगल गान, 4. ग्रामोफोन, 5. युगल जोड़ी

## शोध-पत्र

हिन्दुस्तान के उत्तर पश्चिमी इलाके में स्थित पंजाब एक हरा-भरा क्षेत्र है। भारत का प्रवेश द्वार होने के कारण इसकी सुहावनी धरती शुरू से ही विदेशियों के लिए आर्कषण का केंद्र रही है। पाँच दरियाओं की धरती, अन्न का भंडार और सांसारिक सभ्यता व संस्कृति का आधार स्थल कही जाने वाले पंजाब की सांस्कृतिक परम्परा हमेशा से ही प्रभावशाली रही है। यह धरती ललित कलाओं की जननी भी रही। वास्तव में इन ललित कलाओं में मानवीय भावनाओं को सहज रूप से दर्शाया गया है। जिनके द्वारा एक सभ्यता अपना विकास करती है। इन ललित कलाओं में संगीत एक प्रमुख कला है। संगीत मनुष्य के अन्तर-मन से जुड़ा होता है। एक अध्यात्मिक कला होने के कारण इस में मानवीय हृदय को आकर्षित व तृप्त करने की क्षमता होती है। संगीत कला का सम्बन्ध भावों के प्रदर्शन से है। इस कला के द्वारा एक कलाकार संगीत में रोचकता, रंजकता, मधुरता और सुंदरता ला सकता है।

पंजाब का लोक संगीत भी यहाँ के लोगों की सूक्ष्म भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ का संगीत पंजाबियों के खुले स्वभाव की मूल प्रवृतियों को अपने अंदर समाए बैठा है। पंजाबी संगीत में टप्पे, कलियाँ, बोलियाँ इत्यादि यहाँ की संस्कृति का अटूट अंग हैं जो यहाँ के लोक-जीवन को विविध रूप से मूर्तिमान करते हैं। पंजाबी संगीत संसार भर में चर्चित है क्योंकि यहाँ के संगीत की हर विधा किसी न किसी रूप में मानवीय मन का रंजन करती आई है, फिर चाहे वह ऐतिहासिक अथवा मिथिहासिक रचनाएँ हो या प्रचलित गायकी की सूक्ष्म विधाओं में से उपजे गीत हों। यहाँ के संगीत की मौलिक लोक धुनें इस के क्षेत्र को और अधिक विस्तृत बनाती हैं।

हरदयाल थूही का कथन इस संदर्भ में महत्त्वपूर्ण है और वे कहते हैं— ''प्राचीन समय से ही पंजाब की पारम्परिक गायकी अलग-अलग रूपों में प्रचलन में रही है जैसे रासों की गायकी, नकलियों की गायकी, जलसों की गायकी, ढड-सारंगी की गायकी, तुंबे-अलगोज़े की गायकी, किंग गायकी इत्यादि।''[1] पंजाबी गायकी की हर विधा अखाड़ों के रूप में पली-बढ़ी है। गाँव में किसी खुली जगह व किसी बड़े पेड़ के नीचे गायक कलाकार द्वारा खुली और बुलंद आवाज़ में गोल दायरे में बैठे श्रोताओं के सामने अपने गायन को प्रस्तुति करना अखाड़ा गायकी कहलाता है। वास्तव में पुराने समय में लोगों के पास मनोरंजन के साधन बहुत कम होते थे। अखाड़ों में होने वाला गायन पंजाबियों की सभ्यता का अहम हिस्सा था। इसी के माध्यम से वह अपना मन बहलाते थे।

पंजाब की लोक गायकी का दायरा बहुत विशाल रहा है। पंजाबी गायकी में व्यक्ति के जन्म से लेकर उसकी मृत्यु तक सभी प्रकार के गीत गाए जाते हैं। 20वीं शताब्दी में प्रचलन में आई पंजाबी गायकी के अधीन ज़्यादातर किस्सों, लोक गाथाओं, कलियों इत्यादि का गायन होता आया है। धर्म कमियाना के अनुसार—''शुरुआती दौर (लगभग 1925-26) की इस गायकी में शूरवीर योद्धाओं की वीरता का गायन इसका विषय वस्तु हुआ करता था।''[2] बाद में आम लोगों की मनोवृति और आनंद को ध्यान में रखते हुए प्रीत-गाथाओं का गायन भी अखाड़ों का मुख्य विषय रहा है। इस तरह लोक गायकी का मूल व स्वरूप धीरे-धीरे बदलने लगा और लोगों के ज़हन में आम जीवन से सम्बन्धित घटनाएँ, मानवीय रिश्ते, प्यार-मोहब्बत, गिले-शिकवे इत्यादि जैसे अनेक विषय पंजाबी गायकी में शामिल होने लगे।

पंजाब में प्रचलित गायकी ने प्राचीन सभ्यता की तस्वीर को पेश करने के साथ-साथ इसके प्राय: प्रत्येक पहलु पर भी प्रकाश डाला है जिसके चलते अखाड़ों की शान रही पंजाबी गायकी धीरे-धीरे अध्यात्मिक प्रवृति से बदलकर मनोरंजन वाली बन गई। इस तरह की गायकी हमेशा से ही प्रत्येक वर्ग के लोगों की पसंद रही है। सांस्कृतिक रंग वाली प्रचलित गायकी के अधीन जहाँ एकल गान का प्रचलन रहा है वहीं युगल गान भी श्रोताओं का पसंदीदा गान रहा है। पंजाब में लोक गायन के क्षेत्र में युगल गान की परंपरा बहुत पुरानी व प्रसिद्ध रही है। यह गान खुले मैदान में लगने वाले अखाड़ों के रूप में प्रदर्शित किया जाता था।

''युगल शब्द अंग्रेज़ी के Duet शब्द का समार्नाथक है जिसका अर्थ है 'जोड़ा'।''[3] इस तरह युगल गान का अर्थ दो व्यक्तियों द्वारा मिलकर गाए जाने वाले गीत से लिया गया है। यह दो व्यक्ति दो मर्द भी हो सकते हैं, दो औरतें भी हो सकती हैं और एक मर्द, एक औरत भी हो सकते हैं। सांस्कृतिक लोक गायन के अधीन एक औरत और एक मर्द के द्वारा जोड़ी के रूप में पेश किए जाने वाले गायन को ही युगल गान के अन्तर्गत स्वीकार किया गया है। पंजाबी गायकी के क्षेत्र में युगल गीत गाने वाली इस जोड़ी को श्रोताओं द्वारा बहुत पसंद किया गया है। यह गायकी कहीं न कहीं पंजाब की लोक गायन परंपरा के काफी नज़दीक है पर अपने अर्थ और स्वरूप से यह उससे भिन्न हो जाती है। चंचल प्रवृति की होने के कारण इसे पापुलर गायकी के अधीन रखा गया है। दोहरे संवादों वाली यह गायकी समाज में कई तरह के बदलाव लेकर आई। जहाँ इससे पहले प्रचलित रही गायकी में साहित्यक गीत गाए जाते थे वहीं युगल गान के द्वारा पंजाबी गायकी के क्षेत्र में रोमांटिक गीतों की शुरुआत हुई। रोमांस से भरपूर इन गीतों के आगमन से समाज में रहते औरत और मर्द की कुंठित भावानाओं को व्यक्त करने का अवसर मिला और प्यार-मोहब्बत जैसे रिश्तों को खूब बढ़ावा मिला। इसके साथ ही पारिवारिक रिश्तों जैसे पति-पत्नी, देवर-भाभी, जेठ-भाभी, जीजा-साली, सास-बहू इत्यादि की भावनाओं को इस गायकी ने अपने गीतों में पेश किया है। इससे सम्बन्धित कुछ गीतों के उदाहरण इस प्रकार है—

- **देवर-भाभी से सम्बन्धित युगल गीत ( करमजीत सिंह धूरी मोहनी नरूला )**

  *पैरीं झांझरा तू पा, भाभी नच्च के वखा,*
  *सुखां सुखदी नु आया तेरे दियोर दा विआह...*

- **पति-पत्नी से सम्बन्धित युगल गीत ( करनैल गिल-सुरिन्द्र कौर )**

  *परवाह न करदा नड्डी दी, तु सल्फ मारके गड्डी दी,*
  *तुर जाना हौरन मारदा, मैनुं खाण कालियां रातां वे,*
  *तु फिकर करें न नार दा...*

- **जेठ-भाभी से सम्बन्धित युगल गीत ( गुरचरन पोहली-प्रोमिला पम्मी )**

  *दियौर नू खलाके नित गिरियाँ बदामां दियां,*
  *जानीऐं साढ़ वागुं पाली,*
  *नी डोलू छड़े जेठ दा, रोज़ मोड़दी खाली...*

- **सास से सम्बन्धित युगल गीत ( राजिंद्र राजन-रमेश रंगीला )**

  *सस कुटणी संदूकां ओहले, मेरे फेर न बराबर बोले...*

समाज से सम्बन्धित कई तत्कालीन विषय इस गायकी का आधार रहे हैं। आसपास होने वाली हर छोटी-बड़ी घटना को युगल जोड़ियों ने अपने गीतों में बाखूबी ब्यान किया है। पंजाबी युगल गान के प्रचलन से कई प्रकार के सामाजिक बदलाव हुए। इसका सबसे अधिक प्रभाव यहाँ रहती औरत की दशा पर पड़ा। इस गायकी ने औरत को मर्द प्रधान समाज में समानता दिलवाने में अत्यन्त योगदान दिया है। देश की आज़ादी से कई सालों के पश्चात भी औरत को समाज के सामने गाने-बजाने की मनाही थी। वह घर के भीतर ही छोटी-मोटी खुशी के मौके पर गा-बजा सकती थी क्योंकि गाने-बजाने का काम उस समय मुजरा करने वाली बाइयों तक सीमित था। इसके अतिरिक्त पर्दा प्रथा भी समाज की सोच पर कुछ हद तक हावी थी। इसलिए औरतें गाँव में लगने वाले अखाड़ों को अपने घर की छत पर बैठ कर दूर से ही देख-सुन कर अपना मन बहला लिया करती थी परन्तु धीरे-धीरे बदलते समय के साथ-साथ औरतों ने भी अखाड़ों में अपना स्थान बना लिया। इसका श्रेय पंजाब की मशहूर गायकाएँ सुरिन्द्र कौर, प्रकाश कौर और नरिन्द्र बीबा जैसी औरतों को जाता है जिन्होंने घरेलू काम-काज के साथ-साथ गायकी के क्षेत्र में पंजाबी संगीत को एक नया आयाम दिया। इन्हीं से प्रेरित होकर कई औरतों ने युगल गान के क्षेत्र में प्रवेश किया।

पंजाबी सभ्यता में युगल गान की अत्याधिक लोकप्रिय गायन परंपरा रही है। लोग धुनों पर आधारित यह गायकी तूंबी, ढोलक, अलगोज़े, हारमोनियम इत्यादि साज़ों के साथ गाई जाती है। इन साज़ों के अतिरिक्त बांसुरी, घड़ा, बुगदू, तबला, चिमटा इत्यादि साज़ भी समय के साथ-साथ इस गायकी में शामिल होते गये। इस गायकी का मूल आधार पंजाब की सभ्यता है जिसकी तस्वीर को इन युगल गीतों में आसानी से

महसूस किया जा सकता है। पंजाबी युगल गान के अन्तर्गत यहाँ के रीति-रिवाज, रोज़मरा के काम-काज़, घरेलू समस्याएँ, छोटी-छोटी घटित घटनाएँ, रिश्तों के बीच की तकरार जैसे कई विषय शामिल हैं। इन से सम्बन्धित कुछ गीतों के उदाहरण हैं—

- **रीति-रिवाज ( मुकलावे की रस्म ) से सम्बन्धित युगल गीत ( कर्मजीत सिंह धूरी-मोहनी नरूला )**

*आओ कुड़ियो नी समझाओ कुड़ियो,*
*चिट्टा चादरा नी जट्ट खड़काई आ गया,*
*नी लैण सौण दे महीने, नी शुदाई आ गया...*

- **रोज़-मर्रा/घरेलु कामकाज से सम्बन्धित युगल गीत ( कर्मजीत सिंह धूरी-स्वर्ण लता )**

*लिप्प के चूल्ला कत्त के चरखा, मर गई चक्की पीह के,*
*वे उंगलां पक्के चलियाँ, सस दी घगरी सीअ के...*

प्रश्नोत्तर शैली पर आधारित यह गायकी मंचीय अखाड़ों के रूप में पनपनी शुरू हो गई। बेशक इससे पहले भी युगल गान प्रचलित था परन्तु वह सिर्फ रिकार्डिंग तक ही सीमित था। पंजाबी अखाड़ों के रूप में युगल जोड़ी द्वारा गायन छठे दशक के अन्त में ही आरम्भ हुआ। ''इस गायकी को अखाड़ों तक पहुँचाने वाली प्रथम युगल जोड़ी चांदी राम वलीपुरिया और शांति देवी की स्वीकार की गई है। इस युगल जोड़ी को 'शिरोमणि लोक गायक जोड़ी' भी कहा गया है।''[4] इस जोड़ी द्वारा गाए गए सर्वप्रथम गीत के बोल हैं—

*लै जा छलियाँ, भुना लईं दाने,*
*वे मित्रा दूर देया...*

''इस युगल गीत को 1960 में एच.एम.वी. (हिज़ मास्टर्स वाएस) कम्पनी ने एल.पी. में रिकार्ड किया।''[5] इस जोड़ी ने सर्वप्रथम अपने गीतों से अखाड़ों में इस प्रकार के गीतों के रंग से भर दिया। इनसे प्रभावित होकर कई गायक जोड़ियों के रूप में युगल गान को अपनाने लगे। देखते ही देखते इस गायकी का दायरा विस्तृत होने लगा और वह अखाड़ों की शान बन गया। गाँव में लगने वाले मेलों, विवाह समारोह या हर छोटी-बड़ी खुशी के मौके पर लोग युगल जोड़ियों के अखाड़े अपने गाँव में लगवाने लगे। पंजाबी संस्कृति के रंगों में रंगी यह गायकी एक नये दौर की शुरूआत थी। अगर यूँ कहा जाए कि आधुनिक गायकी का उद्‌गम इसी गायकी से हुआ तो यह गलत नहीं होगा। 1960 के तुरन्त बाद अनेक युगल जोड़ियां इस गायकी का शृंगार बनने लगी। इन जोड़ियों ने कई प्रसिद्ध गीत समाज को दिए जो आज भी श्रोताओं द्वारा खूब पसंद किए जाते हैं। कुछ युगल गीतों के उदाहरण इस प्रकार हैं—

- **हरचरन गरेवाल—सुरिन्द्र कौर**

*जे मुंडिया साडी टौर तु वेखणी,*
*गड़वा लै दे चांदी दा*
*वे लक् हिल्ले मजाजण जांदी दा...*

- **हज़ारा सिंह रमता—नरिन्द्र पाली**

*मेरा माही नी तवे तो काला,*
*चिट्टी मैं कपाह वरगी...*

- **आसा सिंह मस्ताना—सुरिन्द्र कौर**

*मेरे यार नु मंदा न बोली,*
*मेरी भावें जिंद कढ लै...*

- **के. दीप—जगमोहन कौर**

*मेरी गल्ल सुणो सरदार जी,*
*मैनुं साड़ी इक लिया दियो....*

- **करमजीत सिंह धूरी—स्वर्ण लता**

*नी घडा ना चुकाएओ कुडियो,*
*मेरी पिंड च मुलाहजेदारी...*

पंजाबी युगल गान ने समाज के प्राय: हर पक्ष को छुआ है। आस-पास की घटनाओं और सामाजिक गतिविधियों का ज़िक्र इन गीतों में स्पष्ट रूप से सुनने को मिलता है जैसे नरिन्द्र बीबा और हरचरन ग्रेवाल द्वारा गाया एक गीत है—

*ऊड़ा, आड़ा, ईड़ी, सस्सा, हाहा, .... अुड़ा, आड़ा वे,*
*मैनु जाण दे स्कुले इक वार हाड़ा वे....*

सातवे दशक के शुरूआती सालों में रिकार्ड हुआ यह गीत नरिन्द्र बीबा का पहला गीत है। जब यह गीत रिकार्ड किया गया था तब समाज में लड़कियों के पढ़ने-लिखने पर पाबंदी थी। इस गीत के माध्यम से एक औरत अपनी पढ़ाई जारी रखने की माँग करते हुए नज़र आ रही है। इसके अतिरिक्त एक और गीत है जिसे मोहम्मद सदीक और रणजीत कौर ने अपनी आवाज़ें दी हैं। गीत के बोल हैं—

*मुक गई फीम डब्बी चों यारों,*
*अज कोई अमली दा ढंग सारों....*

इस गीत में मादक पदार्थ की माँग करते हुए एक अमली (नशा करने वाला) का ज़िक्र किया गया है। युगल गान ने जहाँ इन समस्याओं को अपने गीतों में शामिल करके तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों की तस्वीर पेश की है वहीं इसने कहीं न कहीं नशाखोरी को भी बढ़ावा दिया है।

तकनालजी के बदलने व मशीनी युग के आगमन से जहाँ कार्य-व्यवहार पर असर पड़ा वहीं पंजाबी गायकी भी इससे बच नहीं पाई। युगल गान जो छठे दशक की शुरूआत में पनपना शुरू हुआ था वह 1967 में आई हरित क्रांति के कारण पूर्ण तौर पर विकसित हो गया। स्पीकर व अम्पलीफ़ायर के आने से युगल गायकी दिन दुगुनी और रात चौगुनी उन्नत होने लगी। कई गायक युगल जोड़ी के रूप में अपनी पक्की जोड़ी या पक्का सैट बनाने लगे। देखते ही देखते यह गायकी एक बड़े बाज़ार का रूप धारण कर गई। कई नौजवान गायकों ने युगल गायन के माध्यम

से शीघ्र ही अपना नाम बना लिया। सातवें दशक के आखिर तक युगल गान न सिर्फ पंजाब बल्कि विदेशों में भी सराहा जाने लगा।

युगल गान के क्षेत्र में सबसे अधिक मशहूर व स्थिर रहने वाली जोड़ी मोहम्मद सदीक-रणजीत कौर की है। ''इस जोड़ी ने तकरीबन 30 वर्ष तक युगल गान का प्रचार किया।''[6] इस युगल जोड़ी द्वारा गाए कुछ मशहूर गीतों के उदाहरण निम्नलिखित हैं—

- *नी आजा भाभी झूट लै पींघ हुलारे लैंदी....*
- *कोई कहि दियो रांझे नू, हीर नू मिल लए जांदी वारी....*
- *मलकी खुह दे उत्ते भरदी पई सी पाणी...*
- *आ मुंड़िया वे ज़रा बहि मुंडिया....*
- *न दे दिल परदेसी नू, तैनू नित दा रोणा पै जाऊगा....*

व्यवसायीकरण के दौर में यह गायकी सिर्फ स्टेजी अखाड़ों का शृंगार न रहकर रिकार्डिंग का निखार भी बनी। ग्रामोफ़ोन मशीनों के माध्यम से युगल गान आसानी से घर-घर तक पहुँचने लगा। लोग घर बैठे ही युगल गीतों को सुनकर अपनी पसंदीदा गायक जोड़ी के अखाड़े लगवाया करते थे। इस गायकी का दौर इतना तेज़ी से बढ़ा कि जिसने एकल गान करने वाले कलाकारों को भी युगल गान की तरफ आकर्षित कर जोड़ी बनाकर गाने में मजबूर कर दिया। इस श्रेणी में कुलदीप माणक, सुरिन्द्र छिंदा इत्यादि जैसे मशहूर गायक आ जाते हैं जो कलियों और गाथाओं को गाने के लिए मशहूर थे।

1960 से लेकर तकरीबन 1984 तक का समय युगल गान का स्वर्ण काल कहा जा सकता है। नौवें दशक की शुरूआत में ही इस गायकी के क्षेत्र में एक ऐसी जोड़ी का प्रवेश हुआ जिन्होंने इसे नवीन ऊँचाईयों तक पहुँचा दिया। इस प्रसिद्ध जोड़ी का नाम अमर सिंह चमकीला-अमरजोत है। इस युगल जोड़ी ने कुछ ही सालों की गायकी के सफ़र दौरान अपना नाम प्रसिद्ध गायकों की कतार में दर्ज करवा लिया। इन्होंने जीवन की हर छोटी से छोटी और दबी-छिपी अनुभूतियों को बड़ी आसानी से जग ज़ाहिर किया है। इस जोड़ी ने समाज से सम्बन्धित हर उस पक्ष को अपने गीतों में पेश करने की कोशिश की है जो पर्दे के पीछे घटित होते थे। इनके गीतों की सांकेतिक शब्दावली की वजह से कुछ श्रोताओं ने इस जोड़ी के गायन को स्वीकार नहीं किया परन्तु जितना समय भी इस जोड़ी ने गाया सारी युगल जोड़ियों से ज़्यादा प्रसिद्धि इन्हीं के हिस्से आई। इस जोड़ी द्वारा गाये एक गीत की उदाहरण है—

*पहले ललकारे नाल मैं डर गई, दूजे ललकारे नाल अंदर वड़ गई,*
*तीजे ललकारे नाल नाओं मेरा लै के,*
*सिद्दा आण के दरां दे विच्च वज्जिया*
*नी पट्ठू फिरदै.... फिरदै शराब नाल लद्दिया*

नौंवे दशक में युगल गायकी उच्च दर्जे की न रहकर गिरावट की तरफ बढ़ने लगी। इसी बीच 1984 में पंजाब में हुए आतंकवाद ने इसे वर्जित कर दिया। परिणामस्वरूप पंजाब की गायकी में धार्मिक गान का पुनर-आरम्भ हुआ पर इसके साथ ही युगल गान भी धीमी गति से चलता रहा। इस समय दौरान लोगों का ध्यान प्रचलित हो रही एकल गायकी की तरफ होना लाज़मी था। 1990 में वैश्वीकरण का आगमन युगल गान के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ। मैंडोलियन, चांगों, ढोल, की-बोर्ड, औक्टोपैड इत्यादि जैसे कई नए साज़ों की आमद, नए-नए गायकों का प्रवेश, पश्चिमीवाद, कंप्यूटर व इंटरनैट इत्यादि के प्रवेश ने युगल गान को एक बार फिर तेज़ी से बढ़ने का मौका दिया। इन बदलावों के अधीन अखाडों का रूप भी बदला खुले मैदानों में लगने वाले अखाड़े मंच के रूप में तबदील हो गए। आरंभिक समय में युगल गायन के अधीन गायक माइक के बिना ही अपने खुली और बुलंद आवाज़ों को एक सीमित दायरे तक ही पहुँचा सकते थे परन्तु माइक और स्पीकर जैसे उपकरणों के आ जाने से आवाज़ को कोसों दूर तक पहुँचाया जाने लगा। वैश्वीकरण के कारण प्रसिद्ध एकल गायकों ने फिर से एक-एक युगल गीत अपने कैसेट में शामिल कर श्रोताओं के स्वाद को आज़माया जिसमें वह कामयाब भी हुए। इससे सम्बन्धित कुछ गीतों के उदाहरण इस प्रकार हैं—

- **राज बराड़-अनीता समाना**

*जे मुंडिया साडी टौर तु वेखणी,*
*गड़वा लै दे चांदी दा*
*वे लक् हिल्ले मजाजण जांदी दा....*

- **लवली निर्माण-प्रवीण भारता**

*लारा ला के जिंद साडी सूली टंग गई,*
*सौं गये जदों सारे मैं ज़रूर आऊँगी....*

कई साल खामोश रहने के बाद यह गायकी कुछ कलाकारों की हिम्मत से फिर से उठी परन्तु तब तक दलेर मेंहदी, सुखशिंदर शिंदा, सरदूल सिंकदर इत्यादि जैसे कई गायक एकल गान के द्वारा श्रोताओं के दिलों पर छा चुके थे। 20वीं शताब्दी के आखिरी दशक में पापुलर गायकी पंजाबी समाज में पूरी तरह से फैल चुकी थी। फिर से संभलने की कोशिश में लगा युगल गान धीरे-धीरे पंजाबी गायकी के क्षेत्र में अपने पैर ज़माने की कोशिश करता रहा पर सही अर्थों में 21वीं सदी की शुरूआत ही इस गायकी की पुन: वापसी का समय समझी जा सकती है। इस गायकी ने एक बार फिर से पंजाबी संगीत के क्षेत्र में अपने पैर जमा लिए। इस बार इस गायकी की नज़ाकत और पहलू काफी हद तक बदल चुके थे। जहाँ शुरूआती दौर की युगल गायकी का जोड़ियों के रूप में प्रचार रहा है वहीं नए दौर में फिर से पनपी इस गायकी में हर गीत के लिए अलग-अलग जोड़ियाँ बनने लगी जिसकी उदाहरण मिस पूजा द्वारा गाए सैंकड़े गीत हैं। इसके अतिरिक्त पश्चिमी साज़ों का शोर आज की इस गायकी का अहम हिस्सा बन चुका है। नए दौर की इस युगल परंपरा में गुणवता की और ध्यान न देकर इसके गणितात्मक पहलू पर ज़्यादा गौर किया जा रहा है। इसके विषय वस्तु में भी गहरे बदलाव आ चुके हैं जिसके अधीन संचार साधनों, हथियारों, मशीनरी इत्यादि का जिक्र किया जा सकता है।

## शोध-पत्र में प्रयुक्त युगल गीतों की सारणी

| क्र.सं. | गीत के बोल | गायक-गायिका | गीतकार | संगीतकार | साल | रिकार्डिंग कंपनी | रिकार्ड का प्रकार | रेकार्ड नम्बर | अवधि | छंद |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | पैरीं झांजरां तु पा, भाभी नच्च के वखा | कर्मजीत सिंह धूरी-मोहिनी नरूला | – | – | – | – | – | – | 3:08 | 6[7] |
| 2. | परवाह न करदा नड्डी दी | करनैल गिल-सुरिन्द्र कौर | जग्गा सिंह गिल (नत्थोहेडी वाला) | – | – | – | – | – | 5:40 | 4[6] |
| 3. | नी डोलू छडे जेठ दा, रोज़ मोड़दी खाली | गुरचरन पोहली प्रोमिला पंमी | भोल्ला सिंह चंन (चंन गुरायां वाला) | के.एस. नरूला | 1981 | एच.एम.वी. | एल.पी. | S/45NLP-4027 | 3:29 | 4[9] |
| 4. | सस कुटणी संदूकां ओहले | राजिंद्र राजन-रमेश रंगीला | चतर सिंह परवाना | – | 1968 | – | – | – | 3:06 | 6[10] |
| 5. | नी लैण सौण दे महीने, नी शुदाई आ गया | कर्मजीत सिंह धूरी-मोहिनी नरूला | अमरीक सिंह धरोडवी | के.एस. नरूला | 1980 | एच.एम.वी. | ई.पी. | 7 EPE. 2075 | 2:45 | 6[11] |
| 6. | वे उंगलां पक्क चलियाँ, सस दी घगरी सीअ के | कर्मजीत सिंह धूरी-स्वर्ण लता | साजन रायेकोटी | के. पन्ना लाल | 1975 | एन्जल | सुपर 7 रिकार्डस | S/7LAE. 24012 | 2:57 | 6[12] |
| 7. | ले जा छलियाँ, भुना लईं दाने | चांदी राम वलीपुरिया शांति देवी | इंद्रजीत हसनपुरी | – | 1960 | एच.एम.वी. | एल.पी. | ECLP. 2277 Vol. II | 3:01 | 7[13] |
| 8. | वे लक् हिल्ले मजाजण जांदी दा | हरचरन गरेवाल-सुरिन्द्र कौर | इंद्रजीत हसनपुरी | जसवंत भंवरा | 1965 | एच.एम.वी. | एल.पी. | N94299 (पत्थर का तवा) ECLP. 2331 (प्लासटिक का तवा) | 3:08 | 6[14] |
| 9. | मेरा माही नी तवे तो काला, चिट्टी मैं कपाह वरगी | हज़ारा सिंह रमता-नरिन्द्र पाली | हज़ारा सिंह रमता | – | 1964 | कोल्मबिया | – | CO. 39527/ CE1. 80940 | 2:48 | 6[15] |
| 10. | मेरे यार नू मंदा न बोलीं | आसा सिंह मस्ताना-सुरिन्द्र कौर | – | – | – | – | – | - | 6:28 | 11[16] |
| 11. | मेरी गल्ल सुणो सरदार जी | के.दीप-जगमोहन कौर | चमन लाल सहगल | के.एस. नरूला | 1972 | एच.एम.वी. रिकार्डस | ई.पी. | 7EPE. 1904 | 3:21 | 5[17] |

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12. | नी घडा ना चुकाएओ कुडियो | कर्मजीत सिंह धूरी–स्वर्ण लता | हरदेव दिलगीर (देव थरीके वाला) | – | 1973 | ओडियन | – | 7TJN. 22053 | 3:10 | 8[18] |
| 13. | ऊड़ा, आड़ा, ईड़ी, सस्सा, हाहा.... | हरचरण गरेवाल–नरिन्द्र बीबा | गुरदेव सिंह मान | – | 1963 | एच.एम.वी. | एल.पी. | ECLP. 2289 Vol. III | 3:13 | 7[19] |
| 14. | मुक गई फीम डब्बी चों यारो | मोहम्मद सदीक–रणजीत कौर | बाबू सिंह मान (मान मराड़ा वाला) | के.पन्ना लाल | 1974 | एन्जल | सुपर 7 | S/7LAE. 24010 | 2:57 | 8[20] |
| 15. | नी आजा भाभी झूट लै पींघ हुलारे लैंदी | मोहम्मद सदीक–रणजीत कौर | बाबू सिंह मान (मान मराड़ा वाला) | – | 1975 | एच.एम.वी. | ई.पी. | 7EPE. 1976 | 3:01 | 5[21] |
| 16. | कोई कहि दियो रांझे नू | मोहम्मद सदीक–रणजीत कौर | बाबू सिंह मान (मान मराड़ा वाला) | के.एस.नरूला | 1978 | ई.एम.आई | ई.पी. | EMGE23003 | 3:14 | 8[22] |
| 17. | मलकी खुह दे उत्ते भरदी पई सी पाणी | मोहम्मद सदीक–रणजीत कौर | सोहन सिंह सीतल | के.पन्ना लाल | 1976 | एच.एम.वी. | ई.पी. | 7EPE. 1981 | 4:20 | 6[23] |
| 18. | आ मुंड़िया वे ज़रा बहि मुंडिया | मोहम्मद सदीक–रणजीत कौर | बाबू सिंह मान (मान मराड़ा वाला) | के.एस.नरूला | 1978 | एच.एम.वी. | ई.पी. | 7EPE. 2044 | 3:10 | 5[24] |
| 19. | न दे दिल परदेसी नू रणजीत कौर | मोहम्मद सदीक | बाबू सिंह मान (मान मराड़ा वाला) | चरणजीत सिंह आहूजा | 1981 | ई.एम.आई | एल.पी. | ECSD. 3045 | 3:22 | 5[25] |
| 20. | पहले ललकारे नाल मैं डर गई | अमर सिंह चमकीला अमरजोत | अमर सिंह चमकीला आहूजा | चरणजीत सिंह | 1984 | एच.एम.वी. | एल.पी. | . | 3:27 | 6[26] |
| 21. | वे लक् हिल्ले मजाजण जांदी दा | राज बराड़–अनीता समाना | इंद्रजीत हसनपुरी | – | 2004 | टीम म्यूज़िक | – | . | 3:55 | 6[27] |
| 22. | लारा ला के जिंद साडी सूली टंग गई | लवली निर्माण–प्रवीण भारता | लखविन्द्र मान | जोए अतुल | 2005 | – | – | . | 2:49 | 3[28] |

अन्त में यही कहा जा सकता है कि युगल गान आज भी प्रचार में है परन्तु इसका अस्तित्व व मूल पूर्व प्रचलित युगल गान से भिन्न है क्योंकि आज के दौर की गायकी दिखावे पर आधारित है। आज गीतों में शब्दावली से ज़्यादा फ़िल्मांकण ज़रूरी बन गया है जिसकी वजह से आज पंजाबी गायकी गिरावट की और बढ़ रही है। इसलिए यह ज़रूरी है कि आज के नौजवान कलाकार जिन्होंने अपनी सभ्यता, संस्कृति व संगीत को सँभालना है, पहले प्रसिद्ध रह चुके युगल गान की अमीर विरासत और इसके कलाकारों की देन को अच्छे से समझें व पहचाने तांकि आज की युगल गायकी को वे एक सही दिशा प्रदान कर सके। पंजाबी गायकी का आज और कल यहाँ की नौजवान पीढ़ी के हाथों में है। इसका सही प्रयोग पंजाब के सभ्याचार को और अमीर बना सकता है। इसके लिए ज़रूरत है तो बस सही दिशा में थोड़े से प्रयत्न करने की।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1. थूही, हरदयाल, पंजाबी लोक गायकी का सफ़र, 2011, पंजाब संगीत नाटक अकादमी, चंडीगढ़, पृ. 16.
2. साक्षात्कार: गीतकार धर्म कमियाना, पटियाला, तिथि 18.01.2017., 11.20 प्रात:
3. वर्मा, आचार्य रामचन्द्र, लोक भारती बृहत् प्रमाणिक हिन्दी कोश, 2004, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 761.
4. घुगिआणवी, निंदर, साडीयां लोक गायिकावां, 2008, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पृ. 28.
5. थूही, हरदयाल, लै जा छल्लियां.... वाले चांदी राम नु चेते करदियाँ, तिथि 12.7.2015, पंजाबी ट्रिबियून, चंडीगढ़।
6. साक्षात्कार : गायिका रणजीत कौर, लुधियाना, तिथि 6.12.2015., 4.30 शायं
7. https://youtu. be accessed on May 02, 2019, 10.30 AM
8. https://youtu. be accessed on May 02, 2019, 11.00 AM
9. फोन द्वारा साक्षात्कार जसविन्द्र शर्मा, रेकॉर्ड संग्रहकर्ता, तिथि 29.04.2019., 11.10 प्रात:
10. https://youtu. be accessed on May 03, 2019, 11.30 AM
11. फोन द्वारा साक्षात्कार जसविन्द्र शर्मा, रेकॉर्ड संग्रहकर्ता, तिथि 29.04.2019. 11.30 प्रात:
12. फोन द्वारा साक्षात्कार जसविन्द्र शर्मा, रेकॉर्ड संग्रहकर्ता, तिथि 29.04.2019. 12.00 प्रात:
13. फोन द्वारा साक्षात्कार परमजीत सिंह रंगीला, रेकॉर्ड संग्रहकर्ता, पटियाला, तिथि 28.04.2019, 04.00 शायं
14. फोन द्वारा साक्षात्कार जसविन्द्र शर्मा, रेकॉर्ड संग्रहकर्ता, तिथि 29.04.2019., 12.10 प्रात:
15. https://youtu. be accessed on May 03, 2019, 04.20 PM
16. https://youtu. be accessed on May 04, 2019, 10.00 AM
17. https://youtu. be accessed on May 04, 2019, 11.30 AM
18. साक्षात्कार परमजीत सिंह रंगीला, रेकॉर्ड संग्रहकर्ता, पटियाला, तिथि 22.06.2018., 04.00 शायं
19. साक्षात्कार परमजीत सिंह रंगीला, रेकॉर्ड संग्रहकर्ता, पटियाला, तिथि 22.06.2018., 04.30 शायं
20. फोन द्वारा साक्षात्कार जसविन्द्र शर्मा, रेकॉर्ड संग्रहकर्ता, तिथि 04.04.2019. 02.00 दोपहर
21. https://discog. piezoelektric. org/hmvindia/index accessed on May 04, 2019, 11.45 AM
22. फोन द्वारा साक्षात्कार जसविन्द्र शर्मा, रेकॉर्ड संग्रहकर्ता, तिथि 04.04.2019, 03.00 शायं
23. फोन द्वारा साक्षात्कार जसविन्द्र शर्मा, रेकॉर्ड संग्रहकर्ता, तिथि 04.04.2019, 03.30 शायं
24. फोन द्वारा साक्षात्कार जसविन्द्र शर्मा, रेकॉर्ड संग्रहकर्ता, तिथि 04.04.2019, 04.00 शायं
25. फोन द्वारा साक्षात्कार जसविन्द्र शर्मा, रेकॉर्ड संग्रहकर्ता, तिथि 04.04.2019, 04.00 शायं
26. साक्षात्कार परमजीत सिंह रंगीला, रेकॉर्ड संग्रहकर्ता, पटियाला, तिथि 22.06.2018, 05.00 शायं
27. https://g. co accessed on May 06, 2019, 11.30 AM
28. https://g. co accessed on May 07, 2019, 10.00 AM